12 अप्रैल, 2010 को 11.30 बजे विज्ञान भवन, नई दिल्ली में राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन पुरस्कार वितरण समारोह में भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री मो. हामिद अंसारी का अभिभाषण

आज़ादी के बाद से आरंभ किये गए ग्रामीण स्वास्थ्य प्रयासों में सबसे महत्वाकांक्षी प्रयास के रूप में शुरू किए गए राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के पांच वर्ष पूरे होने के अवसर पर आयोजित आज के समारोह में भाग लेते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है।

मैं पुरस्कार विजेता राज्यों को मिशन के कार्यान्वयन में उनकी सफलता तथा देश के ग्रामीण भागों में सबसे गरीब परिवारों को बढ़िया स्वास्थ्य सेवाएं सुलभ कराने और उन्हें सस्ता बनाने में हासिल की गई प्रगति पर बधाई देता हूँ।

प्रारंभ में यही कहना होगा कि अत्यंत खराब प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा अवसरंचना के कारण ही राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (एन.आर.एच.एम.) की आवश्यकता महसूस की गई। क्षेत्रीय असमानताओं ने इस समस्या को और गंभीर बना दिया और साफ-सफाई, पेयजल, स्वच्छता और पोषण जैसे स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों को लागू करने के मामले में रुकावटें पैदा कीं।

मिशन में एक अनोखी बात पर बल दिया गया है। मिशन कार्यात्मक, सामुदायिक स्वामित्वाधीन तथा विकेन्द्रीकृत अंतर-क्षेत्रीय सम्मिलन वाली स्वास्थ्य वितरण प्रणाली की स्थापना करता है ताकि लैंगिक समानता, सामाजिक समानता, जल की स्वच्छता, शिक्षा, इत्यादि जैसे विभिन्न सामाजिक-आर्थिक कारकों पर समानांतर कार्रवाई की जा सके।

अत:, यह कार्यक्रम/योजना पद्धति से स्वास्थ्य प्रणाली पद्धति की ओर दिशा परिवर्तन को चिन्हित करता है।

विशेषज्ञों के एक सुविख्यात अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार पैनल ने मिशन का मध्यावधि मूल्यांकन किया। उसका निष्कर्ष उल्लेखनीय है:

"अपेक्षाकृत कम समय में एन.आर.एच.एम. की यह उपलब्धि रही है कि उसने बुनियादी स्तर से सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं की मांग के स्तर को और अधिक बढ़ा दिया है। इसके परिणामस्वरूप, हम यह मानते हैं कि इससे इस बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए व्यवस्था और प्रक्रिया बेहतर ढंग से काम करने के लिए बाध्य होंगी।"

पैनल ने यह नोट किया कि उपलब्धियों के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में निम्नलिखित शामिल हैं- प्रति हजार व्यक्तियों के लिए एक प्रत्यायित सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता नियुक्त करना, शिशु एवं मातृ स्वास्थ्य देखभाल के बारे में बेहतर जागरूकता पैदा करना, अस्पतालों के माध्यम से होने वाले प्रसव और बहिरंग रोगियों की संख्या में वृद्धि करना और सेवाओं को पहुंचाने हेतु लचीलेपन के साथ सुविधाओं के सभी स्तरों पर ज्यादा (अन-टाइड) निधियां उपलब्ध कराना।

मिशन के लिए भारत सरकार की प्रतिबद्धता इस विश्वास पर आधारित है कि सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में सुधार लाना और उसे पुन: सक्रिय तथा सक्षम बनाना कोई लघु प्रयास नहीं है किंतु बहुत बड़ा प्रयास (मैराथॉन) है जहां नागरिकों और सरकार को धैर्य, दृढ़ता, समर्पण के साथ कार्य करने तथा अंतिम लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।

अत:,एन.आर.एच.एम. के माध्यम से केन्द्रीय सरकार राज्य सरकारों के नेतृत्व को सार्वजनिक स्वास्थ्य प्राथमिकताएं निर्धारित करने तथा मानव संसाधन तथा शासन संबंधी सुधारों पर बल देने में मदद कर रही है।

मिशन की शेष अवधि में हमें पांच प्रमुख चुनौतियों का सामना करना होगा:

प्रथम चुनौती जैसा कि अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार पैनल ने नोट किया है, ग्रामीण भारत में स्वास्थ्य सेवा प्रदान करना लगभग पूर्ण रूप से संभव है, इसका एकमात्र अपवाद है- गर्भवती महिलाओं के लिए प्रसवपूर्व परीक्षण। संचारी रोगों के बोझ तथा ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य संबंधी अवसंरचना के निर्माण की आवश्यकता के कारण लम्बे समय से आरोग्यकर स्वास्थ्य सेवा नियोजित प्रयासों का केन्द्र बिंदु रही है।

इसके साथ-साथ, राष्ट्र के रूप में हम रोकथाम और संवर्धक स्वास्थ्य सेवा को कम प्राथमिकता नहीं दे सकते। भावी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय उत्पादकता तथा हमारे व्यापार और उद्योग की दक्षता बढ़ाने में रोकथाम सेवा से होने वाले असीम लाभों को कम करके नहीं आंका जाना चाहिए।

दूसरी चुनौती, एन.आर.एच.एम. के कारण मांग में असीम वृद्धि का एक महत्वपूर्ण पहलू है- मानव संसाधन प्रबंधन। माननीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री ने पहले से ही उपलब्ध ग्रामीण स्वास्थ्य व्यवसायिकों के समूह (पूल) में विस्तार करने पर केन्द्रित कुछ नवीन उपायों की घोषणा की है और अन्य स्वास्थ्य व्यवसायिकों को ग्रामीण और कठिनाई वाले क्षेत्रों में काम करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए प्रोत्साहनों की घोषणा की है।

प्रत्यायित सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं और आंगनवाड़ी कर्मकारों के लिए नर्सिंग शिक्षा और कौशल के स्तर को बढ़ाने पर एक साथ ध्यान केंद्रित करके मानव संसाधन की समस्या को बहुत हद तक हल किया जा सकता है।

तीसरी चुनौती, किसी बड़े पैमाने पर समन्वित कार्यक्रम की सफलता उपयुक्त उत्पादन एवं परिणाम लक्ष्यों को निर्धारित किए जाने पर निर्भर करेगी। अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार पैनल ने सिफारिश की है कि केन्द्र और राज्य सरकारों को परिणामों को निर्धारित करने हेतु समझौता ज्ञापन निष्पादित करने चाहिए और इसने यह भी सुझाव दिया है कि यदि यह आदानों के लिए वित्तपोषण करने के बजाए कार्यनिष्पादन के लिए भुगतान करे, तो यह मिशन और अधिक प्रभावी होगा।

नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक द्वारा एन.आर.एच.एम. की निष्पादन लेखा-परीक्षा में मंत्रालय द्वारा निर्धारित किए गए समग्र राष्ट्रीय लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए राज्य-वार भिन्न-भिन्न लक्ष्य विहित करने की सिफारिश भी की गई है। इसमें सुझाव दिया गया है कि प्रगति का भिन्न-भिन्न लक्ष्यों और आंकड़ों के आधार पर राज्य-वार आकलन किया जाए और राष्ट्रीय लक्ष्यों द्वारा ऐसी अंत:राज्यीय एवं अंतर्राज्यीय भिन्नताओं को दर्शाया जाए, जो मिशन को लागू करने के पूर्व विद्यमान थीं।

चौथी चुनौती, मानव विकास एवं सर्व समावेशी विकास के क्षेत्र में संगम एक सशक्त विषय है। पृथक्करण और विशिष्ट योजना/ कार्यक्रम आधारित तरीकों से व्ययित संसाधनों हेतु इष्टतम परिणाम हासिल नहीं होंगे। एन.आर.एच.एम. महिला एवं बाल विकास, साफ-सफाई, पोषण, जल, लोक निर्माण और पंचायती राज संस्थाओं को एकीकृत करने के लिए एक अंतक्षेत्रीय समामेलन पद्धति अपनाना चाहता है। यह एक भगीरथ प्रयास है और इसके लिए सरकार तथा सभ्य समाज के समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है।

पांचवीं चुनौती, लोक स्वास्थ्य संबंधी दृष्टिकोण के अंतर्गत राज्य और जिला स्तरों पर स्वास्थ्य संक्रमण काल के विभिन्न चरणों पर ध्यान दिए जाने की है ताकि उपयुक्त कार्यनीतियां अपनाई जा सके। इस मिशन के अंतर्गत सभी प्रकार के प्रयासों के लिए जिला एक बुनियादी इकाई है और बुनियादी इकाई बना रहता है।

स्वास्थ्य संबंधी संक्रमण-काल के तीन संघटक हैं: (क) जनसांख्यिकीय संक्रमण-काल जिसमें मृत्यु और प्रजनन दरों में कमी लाना शामिल है; (ख) संचारी से गैर-संचारी और जीवन-शैली से सम्बद्ध रोगों में परिवर्तन का महामारी-विज्ञान संबंधी संक्रमण काल; और (ग) सामाजिक संक्रमण काल जिसके अंतर्गत लोग अपने स्वास्थ्य और पोषण का बेहतर प्रबंधन करने की क्षमताएं विकसित कर लेते हैं और लोक स्वास्थ्य प्रणाली के विभिन्न संघटकों का पूरा लाभ लेने में सक्षम हो जाते हैं।

भारत के विभिन्न जिलों में स्वास्थ्य संबंधी संक्रमण काल के इन तीन संघटकों में व्यापक अंतर से उस जटिलता का पता चलता है जिस पर एन.आर.एच.एम. के लक्ष्य हासिल करने के लिए ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।

देवियो और सज्जनो,

आज का यह समारोह इस मायने में अत्यंत महत्वपूर्ण है कि हम अब तक हासिल की गई सफलता का जश्न मनाएं और आगामी चुनौतियों से मुकाबला करने के लिए कर्मठता से तैयारी करें।

हमनें उम्मीदें जगाई हैं, हमने मांग में वृद्धि की है, इन दोनों के जरिए नागरिक ग्रामीण क्षेत्रों में सुलभ, किफायती, जवाबदेह, प्रभावी और विश्वसनीय स्वास्थ्य सेवा की मांग करते हैं। यदि हम इन उम्मीदों पर खरे नहीं उतरते हैं तो हमें माफी की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

मैं पुनः पुरस्कार विजेताओं और माननीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री को उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए बधाई देता हूँ।

मैं आपके प्रयासों की पूर्ण सफलता की कामना करता हूँ।